



Session: 2025-26

Report

“ रेतीले धोरों पर बचपन की मस्ती : जैसलमेर की 'गोल्डन' यादें संजोकर लौटे नन्हे मुसाफिर”

दिनांक: 6 जनवरी 2026 मंगलवार से 10 जनवरी 2026 शनिवार तक , बिरला पब्लिक स्कूल के नर्सरी से चौथी कक्षा तक के **23 बच्चे** और **22 माताओं** ने **जैसलमेर** पश्चिमी राजस्थान की सुनहरी रेत और ऐतिहासिक वैभव के बीच यात्रा की और इन नन्हे स्कूली बच्चों के लिए आयोजित चार दिवसीय शैक्षणिक और मनोरंजक भ्रमण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। थार मरुस्थल के हृदय में बसे '**स्वर्ण नगरी**' **जैसलमेर** की वास्तुकला और संस्कृति को करीब से जानने के लिए बच्चों का दल उत्साह के साथ रवाना हुआ था ।

यात्रा का मुख्य आकर्षण

भ्रमण के दौरान बच्चों ने **जैसलमेर किले (सोनार किला)** की भव्यता देखी, जिसे 1156 ईस्वी में रावल जैसल ने बनवाया था । साथ ही, **गडीसर झील** की नक्काशीदार छतरियाँ और **पटवों की हवेली** की कलाकृति ने बच्चों का मन मोह लिया । **सैम के रेतीले धोरों** पर ऊंट की सवारी और ढलते सूरज (Sunset Point) के नज़ारे ने इस यात्रा को यादगार बना दिया ।

वीरता और संस्कृति का संगम

बच्चों ने न केवल पर्यटन का आनंद लिया, बल्कि **लोंगेवाला बॉर्डर** और **तनोट माता मंदिर** जाकर देश के वीर जवानों की गाथाओं को भी समझा । मरुस्थल के कैंप में आयोजित **कालबेलिया नृत्य** और राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बच्चों को झूमने पर मजबूर कर दिया । साथ ही सभी ने रेगिस्तान में सफारी का भी लुप्त उठाया ।

मार्गदर्शन और सहभागिता

इस यात्रा में मार्गदर्शक श्रीमती अनु राणा ,श्रीमती अनुसुइया एवं सहयोगी दीदी सुमन का विशेष योगदान रहा। प्रधानाचार्य डॉ. नितेश कुमार सिंह ने सभी के कुशल नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसी यात्राएँ बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में मील का पत्थर साबित होती हैं। उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के साहसिक और ज्ञानवर्धक आयोजनों के लिए अपना पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य आदरणीय डॉ नितेश कुमार सिंह ने इस सफल भ्रमण पर हर्ष व्यक्त करते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि इस यात्रा को मात्र एक सैर-सपाटा न मानकर इसे '**जीवंत पाठशाला**' की संज्ञा दीजा सकती है । उनके अनुसार:

- **संस्कार और संस्कृति का मिलन:** छोटे बच्चों के लिए किताबी ज्ञान से हटकर जैसलमेर की ऐतिहासिक धरोहरों और राजस्थानी संस्कृति को साक्षात् देखना उनके मानसिक विकास के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण है ।
- **मातृ-शक्ति की भागीदारी:** नर्सरी से चौथी कक्षा तक के 23 बच्चों के साथ 22 माताओं का इस यात्रा में शामिल होना एक सराहनीय कदम है। इससे बच्चों में सुरक्षा की भावना के साथ-साथ परिवार और शिक्षा के बीच एक मजबूत सेतु का निर्माण होता है।
- **वीरता की शिक्षा:** लोंगेवाला बॉर्डर और तनोट माता मंदिर के दर्शन से नन्हे मुसाफिरों के हृदय में राष्ट्रप्रेम और भारतीय सेना के प्रति सम्मान की भावना का बीजारोपण होगा।
- **व्यवहारिक ज्ञान:** गडीसर झील की वास्तुकला और मरुस्थल के पारिस्थितिकी तंत्र को समझने से बच्चों की जिज्ञासा और सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है।

